# डायरियों से निकला सच

त्रेपन सिंह चौहान

चेतना आंदोलन

# डायरियों से निकला सच

संपादक
त्रेपन सिंह चौहान

चेतना आंदोलन

डायरियों से निकला सच
त्रेपन सिंह चौहान

© चेतना आंदोलन

प्रथम संस्करण : 2010

सर्वाधिकार सुरक्षित

*प्रकाशक*
**चेतना आंदोलन**
चमियाला केमर, टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड
ई-मेल : trepansingh@gmail.com
**( सहायता श्रुति से )**

*मुद्रक*
आकार बुक्स, दिल्ली 110 091

# शिक्षा पर गंभीर सवाल करती डायरियां

*डॉ. अनिल सद्गोपाल*

उत्तराखण्ड के बालगंगा घाटी के चार सरकारी प्राथमिक शालाओं में स्थानीय युवतियों द्वारा अपने व्यक्तिगत अवलोकनों के आधार पर लिखी गयी ये डायरियां शैक्षिक इतिहास रच रही हैं। इनको पढ़ कर अगर हमारी आंखें डबडबा नहीं जातीं तो हमें अपनी संवेदनशीलता पर गहरा शक हो जाना चाहिए। डायरियां केवल उत्तराखण्ड के इतिहास पर सवाल नहीं उठा रही हैं, बल्कि असली सवाल भारतीय गणराज्य की वैधता पर भी उठा रही हैं।

घाटी के ये चार सरकारी स्कूल और वहां नामांकित सैकड़ों बच्चे चीख-चीख कर पूछ रहे हैं कि क्या भारतीय गणराज्य की स्थापना करने वाला संविधान मखौल बन गया है? वे ये जानना चाहते हैं कि संविधान का मूल अनुच्छेद-45 जिसने 14 साल तक के उम्र के सभी बच्चों को 8वीं कक्षा तक की शिक्षा का मौलिक अधिकार दे दिया था, क्या उसके कोई मायने देश की राज सत्ता चलाने वालों के लिए नहीं बचे हैं? वे ये भी जानना चाहते हैं कि क्या शिक्षा के अधिकार के मायने एक जीर्ण-शीर्ण दो या तीन कमरों के ढांचे पर स्कूल का साइन बोर्ड टांगने से पूरे हो जाते हैं? क्या दो या तीन शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की नियुक्ति के मायने शिक्षा देना है? वैसे तो ये बच्चे शायद यह नहीं समझते होंगे कि उनको पढ़ाने के नाम पर सरकार ने जिनको भेजा है वे शिक्षक कम और विश्व बैंक के निर्देश पर भेजे गये ठेका मजदूर ज्यादा हैं, जिन्हें सरकारी भाषा में पैरा शिक्षक बोला जाता है। वे बच्चे यह भी नहीं समझते होंगे कि उनके शिक्षकों को सरकार पढ़ाने के काम में लगाने की बजाय बहुतेरे गैर शिक्षण कामों में क्यों जोत देती है?

26 जनवरी को झंडारोहण के दौरान बड़ी-बड़ी बातें करने वाले राजनेता इन स्कूलों में जाकर यह हकीकत तो नहीं बतायेंगे कि इन स्कूलों को बदहाल करने का फैसला उन्होंने 1970 और 80 के दशकों में ही ले लिया था। और

जब उन्होंने यह तय कर लिया था कि उनके बच्चे अब सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ेंगे, उन्हे मंहगे निजी स्कूलों में पढ़ाया जाएगा। लोकतंत्र की यह एक अजीबोगरीब परिघटना है कि प्रदेश की विधान सभा में जो विधायक सरकारी स्कूलों के लिए साल दर साल धनराशि अवमुक्त करते हैं उनके अपने बच्चे ही उन सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ते। ठीक यही हाल देश की संसद का भी है, जहां बजट का प्रावधान तो सर्वशिक्षा अभियान के नाम से करते हैं लेकिन इस तथा-कथित अभियान से संचालित स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाने की हिम्मत वे नहीं कर सकते। अगर मुट्ठी भर सांसद हिम्मत करते भी हैं तो वे उन स्कूलों में अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते जिनके हालात का दस्तावेज बालगंगा घाटी की युवतियों ने तैयार किया है। उनके बच्चे सरकार द्वारा अभिजात तबके के लिए खड़े किये गये केन्द्रीय विद्यालयों में पढ़ते हैं जिनके बेहतर प्रबन्धन के लिए सरकार ने एक अलग इन्तजाम कर रखा है। कुल मिला कर इन बच्चों को ये नहीं मालूम कि उनकी पढ़ाई चलने या रुकने से प्रदेश के राजनेताओं को कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि न तो उनके बच्चे वहां पढ़ते हैं, न ही उनके नौकरशाहों और पुलिस अफसरों के, न उन उद्योगपतियों और थैलीशाहों के जिनके बलबूते पर वे चुनाव जीतते हैं और उनके उत्थान के लिए वे काम करते हैं।

यह दस्तावेज हमको अनायास ही 19वीं शताब्दी की उस महान घटना की याद दिलाता है जब 1857 की क्रांति के तीन साल पहले सावित्रीबाई फुले ने गांव की लड़कियों के लिए स्कूल खोल दिया था। इस स्कूल के जरिए सावित्रीबाई ने ऐलान किया था कि अच्छी शिक्षा हर लड़की का हक है। यह दस्तावेज हमको ज्योतिराव फुले के 1882 में ब्रिटिश राज द्वारा गठित हंटर कमीशन को पेश किये गये ऐतिहासिक ज्ञापन की भी याद दिलाता है। उस ज्ञापन में महात्मा फुले ने ब्रिटिश राज को ललकारते हुए कहा था कि यह विडम्बना है कि आप अपना शासन चलाने के लिए राजस्व तो मेहनतकश आवाम के पसीने की गाढ़ी कमाई से बटोरते हैं लेकिन शिक्षा पर जो खर्च करते हैं उसका लाभ केवल उच्च वर्णों और उच्च वर्गों को ही मिलता है। ये दस्तावेज हमको यह कहने के लिए मजबूर कर रहा है कि इसे प्रदेश की जनता अपनी सरकार को ब्रिटिश राज मानकर पेश कर दे।

शायद इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि प्रदेश और केंद्र दोनों सरकारों के पास चार दशक पहले कोठारी आयोग की रिपोर्ट मौजूद है। जिसमें स्पष्ट तौर पर कह दिया गया था कि यदि भारत में एकजुटता और आपसी

सद्भाव बनाना है तो आवश्यक होगा कि समान स्कूल प्रणाली स्थापित की जाय, जिसमें हर स्कूल एक पड़ोसी स्कूल हो। कोठारी आयोग ने यह भी कह दिया था कि इस प्रणाली के अलावा सभी बच्चों को समतामूलक गुणवत्ता की शिक्षा देने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं है। जिस पड़ोसी स्कूल का जिक्र कोठारी आयोग करता है वह वैसा पड़ोसी स्कूल नहीं होगा जिसकी गत अगस्त 2009 में केंद्र द्वारा बनाया गया तथा-कथित शिक्षा का अधिकार कानून है। कोठारी आयोग की रिपोर्ट में पड़ोसी स्कूल के मायने हैं, देश के हरेक स्कूल का कानून बतौर एक निर्णायक पड़ोस होगा और उस पड़ोस में रहने वाले हरेक बच्चे को उसी स्कूल में पढ़ना अनिवार्य ही होगा, चाहे वह बच्चा किसान, मजदूर का हो या चाहे कलक्टर या विधायक का या चाहे किसी उद्योगपति का। यहां एक और जरूरी बात का जिक्र (1960 के दशक का) करना अनिवार्य होगा। कोठारी आयोग ने यह भी कहा था कि ऐसे निजी स्कूलों की संख्या नगण्य है जो सरकार से सहायता नहीं लेते और केवल खास तबके के लिए चलाये जाते हैं। इसलिए आयोग ने यह माना कि समान स्कूल प्रणाली विकसित होने पर किसी को भी अपने बच्चों के लिए निजी स्कूलों की जरूरत महसूस नहीं होगी। आगे आयोग ने यह भी कहा कि एक लोकतांत्रिक देश में बच्चों के साथ भेदभाव करने वाले निजी स्कूलों के लिए कोई जगह नहीं है। दुःख केवल इस बात का है कि उस समय भी आयोग के अंदर पूंजीपतियों और अभिजात तबके के प्रतिनिधि मौजूद थे, जिन्होंने इस ऐतिहासिक स्तर को शिक्षित करवाने के लिए कई प्रावधान जुड़वाये। इसके बावजूद जहां तक समान स्कूल प्रणाली अन्य पड़ोसी स्कूल की अवधारणा का सवाल है वहां भारत के सामने आज अन्य कोई विकल्प नहीं है। जब इस तरह की बात होती है तो भेदभाव और गैर-बराबरी को बरकरार रखने वाली ताकतें यह कहती हैं कि *कोठारी आयोग की अनुधारणा तक खूब है, वह अव्यावहारिक है।* भारतीय संविधान को नकारने वाली इन ताकतों को यह बताने की जरूरत है कि उत्तरी अमेरिका और यूरोप के सभी विकसित मुल्कों में पिछले 100-150 सालों से समान स्कूल प्रणाली और पड़ोसी स्कूल की अवधारणा किसी न किसी रूप में लागू है। लेकिन हम इन पूंजीवादी मुल्कों से सभी गलत सबक लेने को तैयार रहते हैं पर उन से एक सही बात जो सीखी जा सकती है, वही सीखने से कतराते हैं। आखिरी बातों का जवाब साफ है वर्ण व्यवस्था पर खड़ा हुआ और वर्गों के बीच बंटा हुआ समाज कभी भी बराबरी का हिस्सा नहीं स्वीकार सकता और साथ में देश के अधिकांश बुद्धिजीवियों का

भी सवाल है जिन्हें बराबरी का इतना डर है कि वे समान स्कूल प्रणाली और पड़ोसी स्कूल के विचार को नकारने के लिए आजकल चतुराई से भरे नये-नये तर्क गढ़ रहे हैं। तर्क गढ़ने और हौवा खड़ा करने में वे माहिर हैं। शायद इसीलिए वे अपने को बुद्धिजीवी मान लेते हैं। सरकार भी इन बुद्धिजीवियों को साथ लेकर चलने के लिए पुख्ता इंतजाम करती है। क्योंकि उसे मालूम है कि इनके जरिये उसकी गलत नीतियों को विश्वसनीयता मिलती रहेगी, इसलिए समय आ गया है कि शिक्षा के संविधान में दिये गये बराबरी के सिद्धांत पर टिकी हुई शिक्षा व्यवस्था को लागू करने की लड़ाई में आम जनता को जोड़ा जाय। यह एक ऐसा जनवाद से जुड़ा मुद्दा है जो केवल अनिवार्य ही नहीं बन गया है, वरन एक बेहतर न्यायशील समाज के निर्माण के लिए तत्कालीन जरूरत भी है। इसी समझ के साथ देश के विभिन्न आंचलों में अब आम जनता के बीच में से यह आवाज उठने लगी है कि शिक्षा का अधिकार कानून 2009 नामंजूर है। क्योंकि यह सर्व शिक्षा अभियान से उपजी बहुप्रति स्कूल व्यवस्था को जिंदा रखने, और साथ में महंगे निजी स्कूलों को सरकारी खजाने से मदद देने और बेलगाम फीस बढ़ाने की भी छूट देता है। लेकिन अब ऐसा आंदोलन भी उभर रहा है जो उक्त कानून की जगह एक नये कानून की मांग कर रहा है, जिसके जरिए देश के सभी बच्चों के लिए पड़ोसी स्कूल पर आधारित समान स्कूल प्रणाली स्थापित की जा सके। तब तक बालगंगा घाटी की स्थानीय युवतियां इसी तरह की डायरियां लिख कर हमें चुनौती देती रहेंगी। वे हमें ये भी याद दिलाती रहेंगी कि वक्त स्कूलों की बदहाली पर आंसू बहाने का नहीं है बल्कि मुट्ठी भींच कर अपनी आवाज बुलंद करते हुए शिक्षा की लड़ाई जीतने का है। तब हम बालगंगा घाटी के स्कूल पर एक नया दस्तावेज तैयार कर पायेंगे, जो 1854 में शुरू किये गये सावित्रीबाई फुले के स्कूल को समर्पित होगा।

# उत्तराखण्ड की स्कूली शिक्षा और कई सवाल

देश की आजादी से पहले उत्तराखण्ड की शिक्षा व्यवस्था मुख्य बाजारों तक ही सिमटी थी। गांव और बाजार के कुछ सामर्थ्यवान लोग ही अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ा पाते थे। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों से पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बेहद नगण्य होती थी। मीलों पैदल चलकर स्कूल तक पहुंचना बच्चों के लिए मुमकिन नहीं था। घने जंगल, जंगली जानवरों का डर, शहरों के प्रति लोगों के मन में कई प्रकार के पूर्वाग्रह होते थे। इसके साथ शिक्षा को लेकर भी तब कई सवाल और भय लोगों के बीच मौजूद थे।

आजादी के बाद गांधी विचारकों ने गांधी जी की मौलिक शिक्षा के सवाल को लेकर काम करना शुरू किया। वे दुर्गम क्षेत्रों में पहुंच कर काम करने लगे थे। इनके मुख्य कामों में जहां शिक्षा के सवाल मुख्य होते थे वहीं समाज में फैली कई कुरीतियों के खिलाफ भी वे यदा-कदा जनजागरण को बढ़ावा देते रहे। इसका असर यह हुआ कि धीरे-धीरे गांव के विकास में स्कूलों की मांग प्रमुखता से जुड़ने लगी थी। यह ऐसा समय था जब देश आजाद होने के बाद खुद को व्यवस्थित करने पर लगा था। देश, सामने उभर आई नई चुनौतियों से निपटने की तैयारी कर रहा था। यह अलग बात है कि बाद के दिनों में अधिकांश स्कूल इनके नेताओं के व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के चलते या तो समाप्त हो गये या उनका स्वरूप बदल गया।

1962 में चीन के साथ युद्व के बाद उत्तराखण्ड में (खासकर सीमान्त क्षेत्रों में) सड़क और शिक्षा के स्तर पर काफी विकास हुआ। उसके पीछे सरकार के इस क्षेत्र पर बेहद मेहरबान होने की वजह भी थी। दरअसल यहां के गांव के अधिकांश लोगों को यह भी नहीं मालूम था कि वे भारत में हैं या चीन में। इस भय से स्कूलों को पहाड़ के दूरस्थ क्षेत्रों तक ले जाया गया। पाठ्यक्रम भी मुख्यत: देशभक्ति से ओत-प्रोत परोसा जाने लगा। बेसिक और माध्यमिक स्तर तक की पढ़ाई पर ही काफी जोर था। देश और प्रदेश सरकार द्वारा चेतना के कई स्तरों पर कामों का संचालन होने लगा। केन्द्र सरकार की सुरक्षा विंग

एसएसवी गांव-गांव में पहुंच कर जनजागरण में जुट गयी। उनके जनजागरण में बंदूक से गोली चलाने का प्रशिक्षण से लेकर स्कूलों के प्रति लोगों में रूचि पैदा करने तक था। वे कुछ समाजिक बुराइयों पर भी चोट करते थे। इनका भी इस प्रकार की शिक्षा के साथ देशभक्ति की शिक्षा पर भी काफी जोर रहा है।

सत्हत्तर के दशक के शुरुआती दिनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) का पहाड़ों में प्रवेश माना जाता है। सरकारी स्कूलों में गिरते शिक्षा के स्तर से चिंतित अभिभावकों को संघ के स्कूल एक विकल्प के रूप में दिखने लगे थे। संघ जहां शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर दे रहा था वहीं संस्कार बोनस में देने की बात कर रहा था। उनकी ये बातें पहाड़ के गांव से लेकर बाजार तक लोगों को प्रभावित कर रही थी। बड़े स्तर पर लोग अपने बच्चे को सरकारी स्कूलों से निकाल कर संघ की स्कूलों में डालने लगे। संघ द्वारा संस्कार के नाम पर जो बीज पहाड़ में बोये जा रहे हैं वे आज सर्व विदित ही हैं।

दरअसल उत्तराखण्ड में जो सबसे बड़ी त्रासदी रही है वह पहचान को लेकर रही है। जो राज्य बनने के बावजूद भी आज तक बनी हुई है। अधिकांश लोगों की कभी भी खेती पूर्ण रूप से आजीविका का साधन नहीं बन पायी है। पशु और मजदूरी करना भी यहां जीवनयापन के मुख्य साधनो में एक रहा है। यहां तक गांव के रिश्ते-नाते, खास कर लड़कियों के अधिकांश रिश्ते लड़के के घर पर रखे अन्न के भण्डार और गोट पर बंधे पशुओं की संख्या के आधार पर तय होते थे। खेती कम होने या ना के बराबर होने के बावजूद उत्तराखण्ड का हर व्यक्ति (अगर वह सरकारी कर्मचारी नहीं है) अपनी पहचान के रूप में अपने आपको किसान बनाये रखना चहता है। वह किसान के साथ मजदूर भी है, पशुपालक भी है यह पहचान कभी भी स्वीकार्य नहीं रही है। खेती, मजदूरी और पशुपालन जैसे घालमेल से भरे कामों को लेकर स्कूल का स्थान सबसे अंत में ही आता है। बच्चों की उम्र स्कूल जाने की हुई नहीं कि मां-बाप को काम के लिए घर से बाहर निकलने पर छोटे भाई बहनों की देख-रेख की जिम्मेदारी उनके सिर आ जाती है। दस-बारह वर्ष तक पहुंचते-पहुंचते उसे पशुओं को जंगलों में चुगाने के साथ घर के कई छोटे-मोटे काम करने पड़ते हैं। अगर हम सत्हत्तर के दशक के दौरान उत्तराखण्ड के गांव में शिक्षा का विश्लेषण करेंगे तो शिक्षा कुछ समझदार घरों तक ही जगह बना पायी थी। यही कारण है कि साठ के दशक के अंतिम दिनों में होटल मजदूर के रूप में पहाड़ों से हो रहे पलायन में गुणात्मक वृद्धि हुई। पलायन का स्तर आज तक लगातार बढ़ रहा है। अब विकास के निम्न कोटि का नाम पर स्कूल तो बहुत

खुले हैं। उनमें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर काफी भिन्न है। आज हालात यह है कि जिस प्रकार की शिक्षा पहाड़ के गांव में दी जा रही है गांव का बच्चा उस शिक्षा को लेता है तो कमजोर होता है। नहीं लेता है तो भी कमजोर होता है। शिक्षा की जो बदतर हालात पहाड़ों में हो रही है वह कोई रोजगार तो यहां के युवाओं को दे नहीं पा रही है। हां, डिग्री लेने के बाद भी यहां का नौजवान होटल में मजदूरी हेतु पलायन करने के लिए मजबूर है। आज होटल मजदूरों के रूप में उत्तराखण्ड एक अच्छी-खासी मजदूर मंडी में परिवर्तित हो चुका है। इसका दूसरा दिलचस्प पक्ष यह है कि विश्व के कई देशों में काम करने वाले उत्तराखंड के होटल मजदूर अपनी पहचान भी आज तक एक कृषक के रूप में ही बना के रखना चाहते हैं।

9 नवम्बर 2000 को उत्तर प्रदेश से अलग होने के बाद अस्तित्व में आया उत्तराखण्ड राज्य की सरकार का राज्य के बेरोजगारों को रोजगार देना पहली प्राथमिकता थी। जिसे होनी भी चाहिए थी। लेकिन सरकार के सामने स्कूल एक ऐसी फैक्ट्री के रूप में उभर के सामने आये हैं, जहां अधिकांश बेरोजगारों को खपाया जा सकता है। चाहे किसी बेरोजगार का उद्देश्य कभी मास्टर बनने का रहा हो या नहीं। बीएड को ठेके में देने के कारण बीएड की डिग्री खरीदना तो आसान हो ही गया है। इसके चलते आज तक कई अयोग्य लोगों का स्कूल में पहुंचना जारी है। इससे सीधी मार गांव के बच्चों के भविष्य पर पड़ रही है। साथ ही वे अध्यापक काफी प्रभावित हो रहे हैं जिनका उद्देश्य कभी अध्यापन कार्य करने का रहा हो और अपनी रुचि से इस पेशे में आये हों। रही-सही कसर अध्यापकों को सरकार द्वारा बड़े स्तर से गैर शिक्षण कार्य में लगा कर पूरी हो रही है। आज हालात यह है कि सरकारी स्कूलों में पढ़ाई का माहौल पूर्णरूप से अनुपस्थित है। इसका सीधा फायदा उन संस्थाओं को जा रहा है जो शिक्षा को या तो बाजारू बनाना चाहते हैं या अपने मूल्यों के आधार पर हांकना चाहते हैं। जरूरत पड़ने पर उसका राजनैतिक या सांप्रदायिक फायदा वे बखूबी उठा रहे हैं। शिक्षा में बड़े स्तर पर गैर सरकारी संस्थाओं के हस्तक्षेप के चलते सरकारी शिक्षण संस्थाओं से लोगों का विश्वास पूर्ण रूप से उठता जा रहा है। उसी का परिणाम है कि गांव के थोड़े-बहुत जागरूक लोगों ने अपने बच्चों को सरकारी स्कूल से निकाल कर निजी स्कूलों की दुकान चलाने वाले लोगों के हवाले कर दिया है। आज शिक्षा के प्रति घोर लापरवाह लोगों के बच्चे ही सरकारी स्कूल में पढ़ रहे हैं। ये लोग एक बार भी अध्यापक से नहीं पूछते हैं कि स्कूल आज बंद क्यों हैं? बच्चे आधा पढ़ाई छोड़कर घर कैसे

आ गये? अध्यापक जी दो माह से कहां गायब हैं? दिन का भोजन क्यों नहीं बन पा रहा है? आदि...आदि...?

शिक्षा के नाम पर सरकार और विश्व बैंक के कई सारे प्रयोग सरकारी स्कूलों में चल रहे हैं। कई एनजीओ के नये आइडिया की प्रयोगशाला भी सरकारी स्कूल ही बन रहे हैं। अगर यह कहा जाये कि सरकारी स्कूल एक प्रयोगशाला मात्र बन के रह गये हैं तो ज्यादा ठीक होगा। जबकि सरकार और इन सब का तर्क होता है कि हम बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए ही यह सब कर रहे हैं। इनसे कभी नहीं पूछा गया कि आपके प्रयोगों को सीखने के लिए स्कूल का अध्यापक जो स्कूल से गायब रहता है उसका असर किसके भविष्य पर पड़ रहा है? स्कूलों में अध्यापकों की साल भर उपस्थिति निकाल दी जाय तो एक चिंताजनक पहलू सामने आता है। वह इतना समय स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के लिए नहीं लगा रहा है, जितना इन वाहियात कार्यक्रमों के प्रशिक्षण के लिए दे रहा है। उसके बाद विश्व बैंक की रिपोर्ट आती है कि यहां के सरकारी स्कूलों में नब्बे प्रतिशत बच्चों को गुणवत्ता वाली शिक्षा नहीं दी जाती है। वह दी भी कैसे जायेगी उसकी एक बानगी स्कूलों में चलने वाले कार्यक्रमों से सामने आ जायेगी जो निम्नलिखित है।

## सर्व शिक्षा अभियान उर्फ सर्वनाशी शिक्षा अभियान

उत्तराखण्ड पृथक राज्य बनने के बाद विश्व बैंक द्वारा संचालित 'सर्व शिक्षा अभियान' साथ ही लागू हो गया था। सर्व शिक्षा अभियान एक समयबद्ध कार्यक्रम है जो 2010 तक प्रस्तावित है। यह निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए लागू किया गया है :

1. शत्प्रतिशत नामांकन धारण, एवं ठहराव।
2. 2010 तक 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को कक्षा 8 तक गुणवत्ता परक शिक्षा पूरी करना। विद्यालय प्रबन्धन में समुदाय की सक्रिय भागीदारी से सामाजिक भेदभाव दूर करना।

उत्तराखण्ड राज्य में सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत राजकीय प्राथमिक विद्यालयों के संचालन हेतु 40 छात्र/छात्राओं पर 1 अध्यापक की नियुक्ति की व्यवस्था है। उच्च प्राथमिक विद्यालय में संचालन हेतु 100 से कम छात्र संख्या पर 3 अध्यापकों की नियुक्ति की व्यवस्था है। राज्य के विषम भौगोलिक क्षेत्र होने के चलते सबसे अधिक प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय दुर्गम एवं

अति दुर्गम क्षेत्रों में स्थित हैं। राज्य में अनुमानित राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 12684 है। इनमें 17 प्रतिशत विद्यालयों में एकल अध्यापकीय शिक्षण व्यवस्था है। इस प्रकार राज्य में लगभग 4599 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 116 में एकल अध्यापकीय शिक्षण व्यवस्था है।

अब सवाल उठना लाजमी है कि सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के तहत जहां एक ओर विद्यालयों में प्रतिदिन कई नवाचारी प्रयोग किये जा रहे हैं वहीं एक अध्यापक द्वारा संचालित प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में गुणवत्तापरक शिक्षा का लक्ष्य कैसे पूरा हो सकता है? अध्यापकों के गैर शिक्षण कार्यों की सूची इतनी लंबी है कि उसे शिक्षण कार्य से जानबूझ कर विमुख करने का षड्यंत्र का शक पैदा होने लगता है, गरीब बच्चों के भविष्य के साथ सरकार कितना बड़ा खिलवाड़ कर रही है। यह भी उभर के सामने आता है। जबकि अध्यापक पठन-पाठन के इतर पूरे दिन मध्याह्न भोजन योजना, सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम, अध्यापक डायरी, एसएसए परियोजना से सम्बधित अनेकों सूचनाओं के निर्माण में ही उलझा रहता है। सूचनाओं का संकलन, विश्लेषण एवं विद्यालय में चलने वाले निर्माण के कार्यक्रम अध्यापकों को हमेशा शिक्षा से इतर उलझाये रखते हैं। इसके अतरिक्त प्रारम्भिक शिक्षा से जुड़े इन अध्यापकों को सर्व शिक्षा अभियान के सेवारत प्रशिक्षणों, अभिमुखीकरण कार्यशालाओं व अन्य नवाचारी कार्यक्रमों के शिविरों एवं बैठकों में प्रतिभाग हेतु बुलाया जाता है। ऐसी स्थिति में एकल विद्यालय वाले स्कूल तो बंद ही हो जाते हैं। यह सब सरकार और एनजीओ के घालमेल से होने वाला शिक्षा के क्षेत्र का ऐसा नाटक है जो आम जनता की समझ से बाहर तो है ही, मास्टर बेचारे को सरकार और जनता से अच्छी-खासी फजीहत उठानी पड़ रही है। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सरकार द्वारा त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव, विधानसभा एवं लोक सभा चुनाव से पहले निर्वाचन सूची निर्माण हेतु स्कूल से हटाया जाता है, उसके बाद पुनर्निरीक्षण की जिम्मेदारी के बाद चुनाव संपन्न कराने की जिम्मेदारी भी अध्यापकों के सिरे ही आ पड़ती है। इस पूरी प्रक्रिया में अध्यापक कई महीनों तक उलझा होने के कारण स्कूल से अनुपस्थित ही रहता है। अब आप समझ सकते हैं कि वह जब वापस स्कूल में पहुंचता है तो स्कूल पाठ्यक्रम को कैसे पूरा करता होगा? जो कि संभव नहीं लगता है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य क्या होगा...? इन सबके बावजूद अध्यापकों को कुछ मूल्यांकन जैसे मानसिक यत्रंणा की प्रक्रिया से भी गुजरना पड़ता है। जो कई स्तरीय होता है।

## 1. परियोजना के स्तर पर

**( क ) विद्यालय कोटिकरण :** एसएसए परियोजना के तहत वर्ष में तीन बार संकुल समन्वयक के माध्यम से विद्यालय कोटिकरण किया जाता है। जिसमें पूरे दिन विद्यालय में बच्चे को सभी विषयों के प्रश्न पत्र हल करने होते हैं। इस प्रक्रिया में समन्वयक को शिक्षकों के सहयोग से सारे प्रश्न पत्रों की परीक्षा लेकर छात्रों एवं विद्यालय का भौतिक तथा शैक्षिक मूल्यांकन कर कोटिकरण करना होता है। इसके लिए अध्यापक को अभिलेखीकरण में सहयोग हेतु शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त पर्याप्त समय देना होता है।

**( ख ) नींव, कार्यक्रम मूल्यांकन :** एसएसए परियोजना के तहत वर्ष में 3 बार प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक के माध्यम से नींव (Neev-National Elementary Education Vision) के तहत भाषा, गणित व अंग्रेजी विषय में प्री-टेस्ट रिपोर्ट, मिड टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट रिपोर्ट संकुल समन्वयक को प्रेषित करनी होती है। जिसके लिए अध्यापक को अभिलेखीकरण हेतु शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त पर्याप्त समय देना होता है।

**( ग ) उपचारात्मक शिक्षण का मूल्यांकन :** सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चों हेतु विद्यालय में अलग से पंजिका बना कर अध्यापक द्वारा अभिलेखीकरण किया जाता है। या अध्यापक को अलग से समय निकाल कर इन बच्चों के लिए उपचारात्मक शिक्षण भी करना होता है। इसकी प्रगति और आख्या समय-समय पर उच्चाधिकारियों को भी भेजनी होती है।

## 2. विद्यालय के स्तर पर

**( क ) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन** (Countinuons and Comprehensive Evaluation) : यह विद्यालय परिवेश में चलने वाली एक ऐसी मूल्यांकन प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक को सतत रूप से अभिलेखीकरण करना पड़ता है। इसके अन्तर्गत अभ्यास, मूल्यांकन, मासिक परीक्षा, अर्धवार्षिक परीक्षा, वार्षिक परीक्षा व प्रयोगात्मक परीक्षा शामिल है।

**( ख ) ग्राम शिक्षा समिति द्वारा मूल्यांकन :** समय-समय पर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों द्वारा विद्यालय में जाकर सर्व शिक्षा अभियान परियोजना के निर्माण कार्यों, नवाचारी कार्यक्रमों व शिक्षण व्यवस्था के सन्दर्भ में मूल्यांकन किया जाता है, जो आवश्यकतानुसार वर्ष में कई बार होता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक को अपना समय देना होता है।

**(ग) विद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा मूल्यांकन :** विद्यालय प्रबन्ध समिति अपनी मासिक बैठकों के एजेण्डे के अनुरूप अपने सेवित क्षेत्र के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में मूल्यांकन एवं अनुसमर्थन करती है। इस प्रक्रिया में अध्यापक को अपना समय देना होता है।

**(घ) ममता समूह द्वारा मूल्यांकन :** प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत चल रहे बालिका शिक्षा के विभिन्न नवाचारी कार्यक्रमों के सफल संचालन, अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के मद्देनजर ममता समूह मासिक बैठकें आयोजित कर अध्यापक के सहयोग से मूल्यांकन प्रक्रिया को संपादित करते हुए प्रगति आख्या समन्वयक को अग्रसारित करते हैं।

उसके अतिरिक्त और काफी कुछ भी है जो बच्चों की पढ़ाई पर चोट पहुंचाता है। जैसे जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) के मेन्टर्स द्वारा भी समय-समय पर विभिन्न प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में जाकर अनुश्रवण के दौरान मूल्यांकन प्रक्रिया पूरी करते हैं। एवं इस कार्य में सम्बन्धित अध्यापक का सहयोग लिया जाता है। कतिपय चयनित विद्यालय का औचक निरीक्षण शिक्षा विभाग के संकुल शिक्षाधिकारी, उप खण्ड शिक्षाधिकारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी, अपर जिला शिक्षा अधिकारी, बेसिक जिला शिक्षा अधिकारी, निदेशक विद्यालय शिक्षा द्वारा किया जाता है। इस दौरान भी शिक्षक को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त समय निकालकर सहयोग करना होता है। क्योंकि प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में चतुर्थ श्रेणी वर्ग नहीं होता। एकल अध्यापकीय विद्यालयों में स्थिति तो और भी विकट हो जाती है। इस परेशानी के चलते कई अधिकारी स्कूलों के निरीक्षण पर नहीं जाते। केन्द्र सरकार की मध्याह्न भोजन योजना के मूल्यांकन व मॉनीटरिंग हेतु राजस्व विभाग, विभिन्न गैर सरकारी संगठन, व सर्व शिक्षा अभियान परियोजना द्वारा नामित संस्थाओं को भी प्रतिबद्ध किया जाता है। इस प्रक्रिया में भी अध्यापक को शिक्षण के अतिरिक्त समय देना होता है।

**सर्व शिक्षा अभियान के तहत उत्तराखण्ड राज्य में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में संचालित कार्यक्रम :**

**1. विद्यालय कोटिकरण :** वर्ष में 3 चक्रों में सम्पादित किया जाता है।

**2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन :** वर्ष भर चलने वाली मूल्यांकन प्रक्रिया।

**3. उपचारात्मक शिक्षा :** न्यून अधिगम स्तर वाले छात्रों के लिए संचालित।

**4. समेकित शिक्षा :** जिन सेवित बस्तियों एवं विद्यालयों में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे अध्ययनरत हैं उनके लिए विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम, गृह आधारित शिक्षण, कौशल विकास शिविर आदि अनेकों गतिविधियां संचालित हैं।

**5. कम्प्यूटर एडेड लर्निंग प्रोग्राम :** राज्य के चयनित राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम 2 कम्प्यूटर सैट प्रदान कर संबंधित विद्यालय के अध्यापक को प्रशिक्षण करते हुए कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था की गयी है।

**6. रूम टू रीड कार्यक्रम :** राज्य के चयनित राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट के सहयोग से बच्चों के रूचिपूर्ण अधिगम के मद्देनजर एक पुस्तकालय व पृथक कक्ष की व्यवस्था तथा सिस्टर एनजीओ द्वारा इन विद्यालयों में एक शिक्षाकर्मी की अंशकालीन नियुक्ति।

**7. नींव** (Neev—National Elementary Education Vision) : राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में भाषा, गणित व अंग्रेजी विषयों में न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त करने हेतु विभिन्न सोपानों में अधिगमन कराने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम लागू किया गया।

**8. NPEGEL** (National Programme of Education for Girls at Elementary Level) के अर्न्तगत बालिकाओं हेतु विभिन्न नवाचारी कार्यक्रम संचालित हैं। जिनमें व्यावसायिक दक्षता प्रशिक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, शिक्षण अधिगम सामग्री वितरण, पुस्तकालय व्यवस्था, कराटे प्रशिक्षण, मीना कैम्पेन आदि कार्यक्रम प्रमुख हैं।

**9. मिड डे मील कार्यक्रम :** बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन योजना राज्य के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रियान्वित है।

**10. कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय :** उत्तराखण्ड राज्य में कुल 26 आवासीय बालिका विद्यालय संचालित है। जिनमें विद्यालय न जाने वाली एससी, एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक, बीपीएल बालिकाएं अध्ययनरत हैं। फेज तृतीय के ये विद्यालय नजदीकी रा.उ.प्रा. विद्यालय के साथ सम्बद्ध हैं।

**11. सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम :** आधुनिक शिक्षा पद्धति के अनुरूप व एनसीएफ 2005 के अनुसार शिक्षण कराने के उद्देश्य से प्रारम्भिक

शिक्षा में गुणवत्ता के हितार्थ वर्ष में प्रत्येक प्रारम्भिक शिक्षक को 20 दिवसीय सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण करवाया जायेगा जो हर शिक्षक के लिए अनिवार्य है।

**12. सामुदायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम :** प्रारम्भिक शिक्षा के सफल संचालन के लिए प्रत्येक राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों की सेवित बस्ती के ग्राम शिक्षा समितियों व विद्यालय प्रबन्धन समितियों के सदस्यों के लिए वर्ष में एक बार दो दिवसीय वीआईसी-एमईसी प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है।

**13. निर्माण कार्य :** राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु ग्राम शिक्षा समितियों के माध्यम से लघु मरम्मत, वृहद मरम्मत, नवीन निर्माण, नवाचारी निर्माण आदि कार्य संपन्न करवाये जाते हैं।

**14. टीएलएम प्रतियोगता :** वर्ष में एक बार विद्यालय, संकुल, ब्लॉक, जिला, एवं राज्य स्तर पर शिक्षकों के लिए टीएलएम प्रतियोगिता आयोजित की जाती है जिसमें संकुल स्तर पर प्रत्येक शिक्षक को अनिवार्यत: प्रतिभाग करना होता है। टीएलएम निर्माण हेतु राज्य के सभी राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को वर्ष में एक बार 500 रु. की धनराशि प्रदान की जाती है।

**15. सीआरसी, बीआरसी व डीआरसी की कार्यशालाएं :** सर्व शिक्षा अभियान के संचालन कार्यक्रमों की फीड बैक व नवीन योजनाओं की प्लानिंग के मद्देनजर संकुल, ब्लॉक व जनपद स्तर पर संसाधन समूहों का गठन कर कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। इनमें भी अध्यापकों का प्रतिभाग होता है। इस हेतु उन्हे शिक्षण कार्य के अतिरिक्त समय देना होता है।

**16. सृजन प्रतियोगिता :** शिक्षा मेला कार्यक्रम, अनेकों जागरुकता कार्यक्रम, एवं एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम आदि सर्व शिक्षा अभियान द्वारा समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं। एससी-एसटी इन्टर्वेन्सन, NPEGEL व लर्निंग गारन्टी प्रोग्राम आदि के अन्तर्गत चयनित विद्यालयों में सृजन प्रतियोगिता आदि में भी छात्र व अध्यापक को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अतिरिक्त समय निकालना पड़ता है।

उक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त कूड़ा बीनने वाले बच्चे, घुमन्तू परिवारों एवं भीख मांगने वाले बच्चों के लिए उत्तराखण्ड में पहल कार्यक्रम संचालित किया गया है जिनमें ब्रिज कोर्स कैंप, टोकन मनी प्रोग्राम, विशेष शिविर कार्यक्रमों के माध्यमों से इन बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

ऊपर लिखे कार्यक्रमों के अतिरिक्त बहुत से कार्यक्रमों में जैसे,

1. विभागीय कार्यक्रम
2. हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रम
3. वृक्षारोपण सप्ताह के कार्यक्रम
4. विज्ञान दिवस के कार्यक्रम
5. साक्षरता रैलियां
6. पर्यावरण रैलियां
7. पोलियो के खिलाफ रैलियां
8. एड्स के खिलाफ जन जागरण रैलियां
9. इको क्लब के कार्यक्रम
10. स्काउट एवं गाईड कैंप
11. विभिन्न जयन्तियों पर होने वाले आयोजन
12. राष्ट्रीय पर्वों के कार्यक्रम
13. स्कूल में होने वाले ग्राम पंचायत के कार्यक्रम। नेताओं के कार्यक्रम तथा अनेकों तत्कालीन घटनाओं से सम्बंधित विभागीय कार्यक्रम शामिल हैं।

ऊपर लिखे गये बिन्दुओं को पढ़कर थोड़े समय के लिए सोचा जा सकता है कि सरकार और विश्व बैंक बच्चों के विकास के लिए कितना काम करते हैं और सोचते हैं। वैसे ऊपर लिखे हुए सभी कार्यक्रम बच्चों के विकास से सम्बंधित ही लगते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि अध्यापकों को इन सभी कार्यक्रमों में शामिल कर स्कूल से ही बाहर कर दिया गया है। कहीं भी बच्चों की गंभीर पढ़ाई जैसी चीज नहीं दिखायी देती है। ध्यान देने पर यह कार्यक्रम एक ऐसा मीठा जहर नजर आएगा जिससे समाज की जड़ ही खोखली करने का षडयंत्र दिख रहा है। यह ऐसा षडयंत्र है जो बच्चों के विकास के नारे के साथ उनके भविष्य पर गंभीर सवाल पैदा करता है और इन कार्यक्रमों के जारी रहते सरकारी स्कूलों से अपने बच्चों को बेदखली के लिए अभिभावक को मजबूर करता है।

अध्यापक बच्चों को कितना समय स्कूल में दे रहा है, इसका इस चार्ट से स्थिति और स्पष्ट हो जायेगी।

**सर्व शिक्षा अभियान के क्रियाकलापों व गैर शैक्षणिक कार्यों का विवरण**

| क्र. सं. | सर्व शिक्षा अभियान के क्रियाकलापों व गैर शैक्षणिक कार्यों का विवरण | न्यूनतम अवधि | अधिकतम अवधि |
|---|---|---|---|
| 1 | सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण | 20 दिवस | 30 दिवस |
| 2 | वीईसी प्रशिक्षण | 02 दिवस | 02 दिवस |
| 3 | बाल गणना | 05 दिवस | 10 दिवस |
| 4 | टीएलएम प्रतियोगिता में प्रतिभाग | 01 दिवस | 04 दिवस |
| 5 | वीईसी बैठकें | 03 दिवस | 10 दिवस |
| 6 | एमएमसी बैठकें | 03 दिवस | 10 दिवस |
| 7 | एमएमटीए बैठकें | 03 दिवस | 10 दिवस |
| 8 | स्कूल चलो अभियान | 01 दिवस | 02 दिवस |
| 9 | कम्प्यूटर प्रशिक्षण | 03 दिवस | 15 दिवस |
| 10 | कुंजापुरी पैटर्न प्रशिक्षण | 03 दिवस | 10 दिवस |
| 11 | ऑडिट | 01 दिवस | 05 दिवस |
| 12 | MDM Workshop | 01 दिवस | 03 दिवस |
| 13 | School Granding | 03 दिवस | 06 दिवस |
| 14 | क्रीड़ा रैलियां संकुल स्तरीय | 02 दिवस | 03 दिवस |
| 15 | क्रीड़ा रैलियां ब्लॉक स्तरीय | 02 दिवस | 03 दिवस |
| 16 | चुनाव ड्यूटी | 05 दिवस | 10 दिवस |
| 17 | निर्वाचन नामावली निर्माण ड्यूटी | 15 दिवस | 30 दिवस |
| 18 | शिक्षा मेले/सृजन कार्यक्रम 2 अभिदर्शन शिविर आदि | 03 दिवस | 10 दिवस |
| | कुल व्यय अवधि | 76 दिवस | 173 दिवस |

वर्ष में कुल शैक्षणिक दिवस - 240 दिवस

वर्ष में कुल सर्व शिक्षा अभियान के क्रियाकलापों व गैर शैक्षणिक कार्यों में व्यय अधिकतम अवधि-173 दिवस, विशुद्ध शिक्षण हेतु शेष अवधि-76 दिवस

काफी शिक्षक सर्व शिक्षा अभियान के नाम पर विगत दस सालों से सीआरसी, बीआरसी, एमपीआरसी के नाम पर स्कूल से बाहर हैं। प्रोजेक्ट खत्म होने के बाद इनकी स्थिति सबसे दु:खद होने वाली है। जो स्वाभाविक भी है। यह सवाल वाजिब ही उठता है कि जो व्यक्ति विगत दस सालों से लगातार स्कूल से अनुपस्थित है वह वापस जाकर पुन: बच्चों को पढ़ा पायेगा?

इससे भी बड़ी समस्या है कि विगत दस सालों से वे अपने साथियों के साथ एक छोटे-मोटे अधिकारी की भूमिका में आ गये हैं, अपने साथियों पर रौब जमा कर खुद भी कुछ साहब वाली आदतों के आदी हो चुके हैं और उसके साथी भी उसे अपना साहब मानने वाली स्थिति में पहुंच गये हैं। अगर वह पुनः स्कूल में भेजा जाता है तो एक तो बच्चों के साथ पहले ही मजाक हो रहा है इनके वापस स्कूलों में जाने पर उनके भविष्य पर (वैसे भी सरकार ने बच्चों का भविष्य कहीं का नहीं रख छोड़ा है) कोई असर तो नहीं पड़ेगा, हां, एक व्यक्ति के रूप में इनके साथ एक मजाक जरूर हो जायेगा। हमारी सलाह तो यही रहेगी कि इनमें से काफी लोग बेहद योग्य हैं। अपनी योग्यता के आधार पर ही उनकी उक्त पदों पर नियुक्ति हुई है, उनको शिक्षा के उचित विकास हेतु एक अधिकारी की ही भूमिका दी जानी चाहिए।

इसमें ऐसा भी नहीं है कि सभी बीआरसी, सीआरसी व एमपीआरसी योग्य और ईमानदार हैं। इनमें कतिपय लोग तो ऐसे हैं जो परियोजना से पहले भी स्कूल नहीं जाते थे। तब भी स्कूल में पढ़ाने के अतिरिक्त कई धंधे करते थे और अब तो उनको एक तरह से सरकार द्वारा स्कूल से बाहर रहने का सर्टिफिकेट ही मिल गया है। ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें नकारने की जरूरत है। शिक्षक, समाज को भी और सरकार को भी।

अब हम देखते हैं इन सब कामों में उलझे अध्यापक के स्कूल में क्या स्थिति है। इसके लिए चेतना आन्दोलन के छात्र संगठन, नव चेतना छात्र संगठन से जुड़े कुछ उत्साहित छात्र/छात्राओं ने सरकारी स्कूलों में जा कर अध्ययन किया। बच्चों को पढ़ाने में सहयोग किया और अपनी दैनिक डायरियां भरी। उन्ही डायरियों के कुछ अंश हुबहू हम यहां दे रहे हैं। यहां तक कि हर प्रकार की अशुद्धियों को भी यथास्थिति रख रहे हैं।

## रिपोर्ट 1

आज दिनाँक 15-10-2008 को मैं स्कूल में 9:30 बजे गयी तो सारे बच्चे एक ही कमरे में बैठे थे और गुरुजी, मैडम एक भी नहीं आ रखे थे। मैं जब 9:30 बजे से 10:15 बजे तक बैठी रही 10:15 बजे आँगनबाड़ी साहिका मैडम आयी मैंने मैडम से बोला मैडम प्रार्थना नहीं होगी क्या। मैडम नें बोला कोई बात नहीं आज देर हो गयी है। प्रार्थना नहीं होगी। मैडम आते ही 5 मिनट ही बैठी रही उसके बाद वो भी वहाँ से स्कूल के नीचे खेत में अपने पति की चाल में बैठी रही उसके पति का किसी हर्जन की पत्नी से गलत संबंध है।

इसलिए वो उसके चाल में बैठी रही मैडम ने मेरे से बोला तू इन बच्चों को देख मैं थोड़ा अपनें पति को और उस औरत को देखती हूँ कि वे कहाँ जाते हैं। मैंने कहा कि मैडम आप चले जाओ मैं इन बच्चों को संभाल लेती हूँ। मैंने 1 वादन में कक्षा 5 वालों को हिंदी पढ़ाई और कक्षा 4 वालों के पास सवाल करनें के लिए दिए। कक्षा 3 वालों के पास पहाड़े दिए और कक्षा एक व दो वालों के पास अ से ज्ञ तक लिखने को दिए। कक्षा 5 वाले बच्चों के पास हिंदी की किताब पढ़ाई तो सिर्फ प्रियंका और भूपेन्द्र ने किताब पढ़ी और न पढ़ने वालों में से शांती, आरती, मनीष इन सबको बिल्कुल भी एक अक्षर भी पढ़ना नहीं आता कक्षा 4 में 2 लड़की आयी थी इनको मैंने फिर हिंदी पढ़ाई तो इन दोनों को हिंदी पढ़नी आ गई थी। इनका नाम रंजना व अंजली कक्षा 3 के एक बालक सूभम नें 5 तक पहाड़े लिखे इसके आगे नहीं आया और अनूप वृजेश को 2 का पहाड़ा भी लिखना नहीं आया।

कक्षा 2 के 2 लड़की को आया सिर्फ लिखना अ से ज्ञ तक इनका नाम सपना रजनी और एक के अलावा एक भी बच्चे को कुछ भी नहीं आता । फिर 12 बजे मैंने इण्टरबल कर दिया इस बीच में गुरुजी की मिसेज भी आँगनबाड़ी वाली मैडम के साथ स्कूल के नीचे गई फिर मैं स्कूल में अकेली रह गयी। मैंने शिक्षा मित्र वाली मैडम का उपस्थिति का रजिस्टर देखा तो जिस दिन इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य नें मैडम की अप्सेंट लगा रखी थी तो मैडम का उस जगह पर सफेद रंग लगा रखा था। अपनी उपस्थिति लगा रखी थी 1 बजे मैंने बच्चों को बिठा दिया फिर मैंने कक्षा 3, 4 व 5 वालों के पास 10 पक्षियों के नाम व 10 जानवरों के नाम अंग्रेजी में लिखने को दिये। उसके बाद 1:30 बजे मैडम आयी और गुरुजी सुबह को स्कूल से घनसाली को निकल गये थे आज शिक्षा मित्र वाली मैडम नहीं आ रखी थी आँगनबाड़ी की दूसरी वाली कार्यकत्री भी नहीं आ रखी थी और भोजन माता भी नहीं आ रखी थी तो भोजन भी नहीं बना और 2 बजे छुट्टी हो गयी।

आज दिनांक 11-10-2008 को मैं 9:30 बजे स्कूल पहुँची तो सारे बच्चे बैठ गये थे । कुल बच्चे 50 में से 15 आये थे जब मैं गयी तो स्कूल में एक भी टीचर नहीं आये थे। मैडम भी नहीं आ रखी थी। फिर थोड़ी देर तक मैं बैठी रही 10 बज गयी थी। तो गुरुजी की पत्नी ने मेरे से बोला जब तू आ ही गई तो बच्चों से प्रार्थना भी करवाले। मैंने 10:15 बजे बच्चों से लाइन लगवाई तो प्रार्थना में कक्षा 5 की प्रियंका और शांती आगे आ गई । और एक लड़का

कक्षा 5 का भूपेन्द्र आगे पे सावधान विश्राम करने आया प्रार्थना एक भी बच्चे को ठीक ढंग से याद नहीं है। और एक भी प्रार्थना को शुद्ध नहीं बोल रहे थे।

पहली प्रार्थना मानवता के मान मंदिर में और दूसरी प्रार्थना सरस्वती वंदना और तीसरी प्रार्थना भारत वंदना होती है। उसके बाद प्रतिज्ञा होती है। प्रतिज्ञा कक्षा 5 की प्रियंका नें बोली प्रतिज्ञा उसके बाद राष्ट्रगान होता है। जब राष्ट्रज्ञान हो रहा था तब उसी समय आँगनबाड़ी वाली साहिक मैडम आयी राष्ट्रगान एक भी बच्चा शुद्ध नहीं बोलते पर किसी गुरुजी मैडम को ये फिक्र नहीं कि बच्चे शुद्ध बोल रहे हैं या नहीं जो राष्ट्रगान 52 सेकेंड में बोलते हैं वही राष्ट्रगान बच्चे 35 सेकेंड में पूरा करते है। 10:40 पर सारे बच्चे बैठ गये थे 10:4 पर जब शिक्ष मित्र मैडम आयी 10 मिनट ये दोनों मैडम बैठी रही 11 बजे शिक्षा मित्र वाली मैडम ने कक्षा 5 वालों से बोला है तुम मुझे 20 तक पहाड़े लिख के दिखाओ और मैंने कक्षा 1, 2, 3 वालों से अ से ज्ञ तक लिखनें को दिया कक्षा 1 के बच्चों को किसी को भी अ से ज्ञ तक लिखना नहीं आता कक्षा 2 के 1 लड़की रजनी और साहिल का अ से ज्ञ तक आया लिखना और कक्षा 4 के एक भी बच्चे को अ से ज्ञ तक सही ढंग से लिखना नहीं आया कक्षा 4 के एक भी बच्चे नहीं आये थे। आज आँगनबाड़ी वाली मैडम नें बिल्कुल नहीं पढ़ाया शिक्षा मित्र वाली मैडम नें कक्षा 5 को गणित पढ़ायी आज गुरुजी नहीं आये थे भोजन भी नहीं बना क्योंकि भोजन माता नहीं आ रखी थी। सफाई में सिर्फ थोड़ा बहुत कक्षा 5 की प्रियंका भूपेंद्र शांति आती है। बाकी की ड्रेस भी नहीं है। किसी के रिबन नहीं । और कक्षा 4 की रंजना अंजली भी सफाई से आती है और कक्षा दो का साहिल भी सफाई से आता है। और कक्षा 1 का अखिल भी सफाई से आता है ड्रेस में तो ये भी नहीं आते थे। धुले हुए कपड़े लाते हैं। 1 बजे सारे बच्चे बैठ गये थे 2:30 बजे छुट्टी हो गयी थी।

## रिपोर्ट 2

आज दिनांक 19/09/2008 को मैं 9:30 बजे सुबह स्कूल पहुँची। स्कूल में कोई भी बच्चे उपस्थित नहीं थे। स्कूल के दरवाजे बंद थे। 10:05 बजे बच्चों का आना शुरू हुआ। कक्षा 4 के बच्चे के पास स्कूल की चाभी थी उसने स्कूल के ताले खोले और उसके साथ कक्षा 2 कक्षा 3 कक्षा 4 व कक्षा 5 आदि बच्चों ने सफाई की। बच्चों ने कक्षा 4 और कक्षा 5 की कक्षा के बैठनें वाले कमरे की तथा बरामदे की सफाई की। सफाई के दौरान ही शिक्षा मित्र वाली मैडम समय 10:18 बजे पर स्कूल में पहुँच चुकी थी।

सफाई के बाद मैडम ने प्रार्थना हेतु 10:20 बजे लाइन लगवाई। लाइन लगाने में मैंने भी बच्चों की मद्द की। प्रार्थना के बाद 10:45 बजे बच्चे बरामदे में जाकर अपनी कक्षा में बैठ गये।

मैंने बच्चों को पढ़ानें की जिम्मदारी ली कमरे में पानी आने के कारण सभी कक्षा के बच्चे एक साथ बैठे हुए थे। मैंने पहले चार और पांच वालों को श्रुतलेख लिखवाया कक्षा पांच की हिंदी की किताब से श्रवण कुमार वाला पाठ का श्रुतलेख लिखाने के बाद बाकी छोटे बच्चों में एक से तीन तक मैंने हिंदी के पाठ याद करने को दिये।

इस बीच शिक्षा मित्र वाली मैडम ने मुझसे कहा कि मेरा एम.ए. प्रथम वर्ष पर्यावरण समाजशास्त्र का बैक पेपर है। मुझे पेपर की तैयारी करनी है। तुम बच्चों को संभालो और मैं अपनी पढ़ाई करती हूँ।

श्रुतलेख लिखाने एवं बच्चों को पाठ याद करने के लिए देने के बाद मैं मैडम के साथ बैठ गयीं।

इस दौरान एक छात्रा अमीषा की मम्मी स्कूल में पहुँची । स्कूल मैडम के मोबाइल से अपने भाई से वह बात करना चाहती थी। उसका कहना था कि उसके पति ने आज उसकी पिटाई की इसके लिए वह अपने भाई की मद्द चाहती थी। वह अपने पति के ऊपर केश करने की बात कर रही थी।

मैडम उसके भाई का फोन मिलाती उससे पहले मैडम के पति का फोन आ गया। मैडम का पति जर्मन में काम करता है। मैडम अपने पति से बात करने स्कूल के पिछवाड़े में चली गई। मैडम ने 11:22 ये 12:33 तक अपनें पति से बात की। इस बीच मैं और अमीषा की मम्मी साथ बैठे रहे। उसकी उसके पति ने काफी पिटाई की है वह अपनी चोटें मुझे दिखाती रही।

इस बीच बच्चे खूब हल्ला मचाते रहे। आपस में खूब झगड़ते रहे और मैडम के फोन के दौरान मैडम के आने के बाद अमीषा की मम्मी ने अपने भाई के फोन पर मिसकॉल की घंटी बजती रही उसके भाई नें फोन नहीं उठाया। हॉफटाइम से पहले ही मैडम ने कक्षा 4 और कक्षा 5 वालों से एक-2 कविता पढ़ाई और उसका अर्थ सहित समझाया। उसके बाद हाफटाइम का समय हो गया। हॉफटाइम तक मैं अमीषा की मम्मी की कहानी सुनती रही उसके बाद मैं एक गांव में संगठन की बैठक में चली गयी।

स्कूल के हेडमास्टर कहां है इसके बारे में शिक्षा मित्र को कोई पता नहीं है। जब भी पूछो तो वह अनविज्ञता जाहिर करती है।

आज भी बच्चे काफी गंदे थे। स्कूल की ओर से उनको सफाई के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया।

स्कूल में उपस्थित कुल 11 बच्चे थे। बच्चे अनुपस्थित क्यों है इसका शिक्षमित्र के पास कोई जवाब नहीं था।

मध्याहन भोजन आज स्कूल में नहीं बना। शिक्षा मित्र का कहना था कि राशन न होने के कारण खाना नहीं बन पायेगा।

आज स्कूल में न तो आने का समय बच्चों को मालूम है और न जाने का। क्योकि स्कूल में घंटी ही नहीं है तो बजेगी भी कैसे।

बच्चों के पास काफी किताबें पेंसिल आदि का अभाव था।

आज मुझे शिक्षा मित्र द्वारा 80 रुपये दिये गये। जब मैंने उनसे पूछा तो मैडम ने कहा कि आज फीस डे है। जब मैंने फीस के बारे में पूछा तो मैडम का कहना था कि बच्चे तो फीस पूरी देते नहीं हैं। हमें अपनी तनख्वा से पैसे देने पड़ते हैं।

बच्चों से कितने पैसे लिए जाते हैं? बच्चों की फीस कितनीं है? इसके बारे में जानकारी करूँगी।

## रिपोर्ट 3

आज दिनाँक 1/10/2008 मैं 9:30 बजे सुबह विद्यालय पहुँची सभी बच्चे विद्यालय पहुँच रखे थे। अध्यापिका भी 9:35 पर विद्यालय पहुँच चुकी थी। अध्यापिका के आनें के बाद विद्यालय का ताला विकाश से खुलवाया गया। स्कूल के झाड़ू न मिलने के कारण 4 या 5 मिनट तक बच्चे खोजते रहे। तो झाड़ू कार्यालय में मिल गया था और धनवीर और विकास ने कक्षा 4 व 5 वाले कमरे की सफाई की और अर्जुन, शैलेन्द्र, ने कक्षा 3 व 2 वाले कक्ष की कमरे की सफाई की जब ये इस कमरे की सफाई कर रहे थे तो बरामदे की सफाई विकास और धनवीर ने की।

10:05 पर बच्चे कक्षा में बैठे और अध्यापिका कक्षा में ही नाखुन पालिश लगा रही थी। बच्चे बातें करने पर लगे थे 10:51 बजे पर बच्चों की उपस्थिति लगाई गयी। अध्यापिका द्वारा बच्चों को कक्षा कार्य में सुलेख दिया गया। कुछ देर बाद सुलेख लिखाया गया। सुलेख लिखने के बाद अध्यापिका नें कॉफी चैक नहीं की और कक्षा एक, दो, तीन वाले बच्चों को भी कक्षा कार्य दिया गया पर उन पर कोई भी ध्यान नहीं था।

12:30 बजे हॉफटाइम हुआ 1:45 पर हॉफटाइम बंद हो गया। हॉफटाइम

में कुछ बच्चे घर जा रखे थे। और कुछ बच्चे स्कूल में ही थे। ये बच्चे कक्षा 1, 2 व 3 वाले कक्ष में कपड़े की बाल और पाइप के बैट बना रखा था और क्रिकेट खेल रहे थे और अध्यापिका टेबल पर सिर रख कर सो गई। हॉफटाइम बंद होने के बाद सब बच्चे बरामदे में बैठे और अध्यापिका ने कक्षा 4 की हिंदी की किताब से दो पाठ से कहानी सुनायी और इनमें किसी बच्चों की ओर कोई ध्यान नहीं था। कहानी के दौरान कक्षा 1 व 2, 3 वालों को कक्षा को अंग्रेजी में तीन चार लाइन ट्राँसलेशन बोली बाद में किसी की कॉफी चैक नहीं की आज विद्यालय में राशन न होने के कारण भोजन भी नहीं बना अध्यापक (हेडमास्टर) विद्यालय में उपस्थित नहीं था। 14 बच्चे विद्यालय में उपस्थित थे। बच्चे अनुपस्थित क्यों हैं इसका शिक्ष मित्र के पास कोई जवाब नहीं था।

## रिपोर्ट 4

आज दिनांक 13/10/2008 को मैं 9:30 बजे सुबह स्कूल पहुँची तो सभी बच्चे स्कूल पहुंच रखे थे। तो स्कूल के दरवाजे बंद होने के करण बच्चों ने बैग बरामदे में रख दिये। और खेतों में जा कर खेल रहे थे। जब मैं स्कूल पहुंची तो कुछ बच्चे स्कूल में आ गये थे। बच्चों ने बताया कि आज मैडम अस्वस्थ है और स्कूल नहीं आ रही है। तो इसके बाद दो लड़की पूनम और प्रतिभा मैडम के घर स्कूल की चाभी लेने गयी, तो चाभी बिकास के पास दे रखी थी। जब ये लड़कियां मैडम के घर से वापिस आ गयी तो उन्होंने यह बात बतायी और विकास खेतों में खेल रहा था। इसके आनें के बाद 10 बजे स्कूल के दरवाजे खुलवाये गये। और स्कूल की सफाई करवायी गयी। एक कक्ष की सफायी सुविधा और संतोषी ने की। 10:15 बजे बच्चे कक्षा में बैठे मैंने 1 व 2 वालों को अ से ज्ञ तक लिखने को दिया कक्षा 3 वालों को बारहखड़ी लिखने को दी। 4 व 5 वालों को सुलेख लिखनें को दिया। इसके बाद सभी बच्चों ने काफी चेक करवायी। फिर मैं कक्षा 4 व 5 वालों को सुलेख लिखा रही थी तब तक 11 बजे अध्यापक स्कूल पहुंच गये। आज स्कूल में प्रधान एवं अभिभावकों की बैठक रखी गयी थी पूर्व प्रधान सुन्दरलाल 10 बजे स्कूल पहुंचे दोनों अध्यापक स्कूल में नहीं थे। प्रधान भी एक घण्टा तक स्कूल में बैठे रहे तो कुछ बच्चे अध्यापिका के घर से कुर्सी और तिरपाल बैठने के लिए लाये तब तक प्रधान भी घर जानें को बोलनें लगे और मुझे कहा कि आप आज की बैठक ऐसे ही लिख देना कि स्कूल में बैठक हो गयी थी। तब तक हेडमास्टर स्कूल में पहुंच गये थे और प्रधान को स्कूल की ब्यवस्था

बतायी गयी स्कूल में कुर्सी श्यामपट और बैठने के टाटपट्टी नहीं है इसके लिए पैसे निकाल देना। और प्रधान द्वारा स्कूल में 10 सदस्य चुने गये और 10 के नाम प्रधान ने दिए और इतना कहकर प्रधान भी घर चले गये। अध्यापक कहने लगे कि अगर विद्यालय में बैठक नहीं होती तो मैं भी आज स्कूल नहीं आता। 5 या 10 मिनट तक अध्यापक बैठे ही रहे । इसके बाद बच्चों की उपस्थिति लगायी गयी। और 10 तारीख की उपस्थिति भी आज ही लगवाई गयी। बाद में कक्षा 5 की हिंदी की किताब से पाठ 9 की कविता कांटों में राह बनाते हैं। इसको पढ़ाया गया और समझायी गयी। समझाते समय कुछ समय बच्चों का ध्यान इधर-उधर था पर अध्यापक का बच्चों की ओर कोई ध्यान नहीं था। और कहा कि अ से ज्ञ तक शब्द लिखो और पहचानो अभी अध्यापक को बच्चों का नाम पता नहीं है।

12:30 बजे हाफटाइम हुआ।

हाफटाइम में सभी लड़कियाँ खाना खानें घर चली गयी। और लड़के स्कूल में ही थे। और कुछ बच्चे स्कूल में पानी की टंकी बजा रहे थे। तो कुछ बच्चे कंचा खेल रहे थे। स्कूल के कक्ष में ही खेल रहे थे। तो अध्यापक भी दूसरे कमरे में बैठ कर काफी पर न जानें क्या-2 लिख रहे थे। बच्चों की ओर कोई भी ध्यान नहीं था।

1:45 बजे हाफटाइम बंद हो गया।

हाफटाइम बंद होने के बाद अध्यापक कक्षा में बैठे तक नहीं। अपने आप तो बरामदे पर ही घूम रहे थे और बच्चों से बोला एक-2 कर 1 से 100 तक गिनती बोलो कोई भी बच्चे गिनती नहीं बोल रहे थे। अध्यापक के सामने ही लड़ाई कर रहे थे। कुछ बच्चे बाहर अन्दर आने पर लगे थे। पर अध्यापक की बच्चों पर कोई जिम्मेदारी नहीं रही है और स्कूल पर बीड़ी का प्रयोग अधिक करता है। आज स्कूल में मध्याहन भोजन भी नहीं बना। 22 बच्चे उपस्थित थे बच्चे अनुपस्थित क्यों हैं, अध्यापक के पास इसका कोई जवाब नहीं था। तीन बजे स्कूल बंद हो गया।

## रिपोर्ट 5

आज दिनाँक 18/10/2008 को मैं 9:30 बजे सुबह विद्यालय पहुँच गयी थी। विद्यालय में सभी बच्चे पहुँच रखे थे। स्कूल की चाभी कक्षा पाँच की लड़की प्रतिमा ने मेज में रखी थी। आज विद्यालय का दरवाजे खुले थे साथ ही विद्यालय की सफाई भी हो गयी थी। इसके बाद प्रार्थना बोली गयी। 9:45 बजे

अध्यापिका विद्यालय पहुँची अध्यापिका के आनें के बाद बच्चे कक्षा प्रवेश हुए। विद्यालय में पेपर काफी कुछ नहीं था। हेडमास्टर के पास परीक्षा के पेपर काफी थी। अध्यापक न होने के कारण बच्चे 60 या 70 मिनट तक बैठे रहे। 10 बजे अध्यापक विद्यालय पहुँचे। अध्यापक के वार्षिक पेपर नहीं लाया था। पेपर न होने के कारण शिक्षा मित्र वाली नें किताब से चार पाँच प्रश्न तीनों कक्षाओं के लिए पेपर की काफी पर लिख कर दिया और सभी बच्चों ने साथ बैठकर हिंदी का पेपरा किया। विद्यालय में ऐसा पता नहीं चल रहा था कि बच्चों का पेपर हो रहा है। दो अध्यापक बरामदे में आकर बैठ गये कमरे पर बहुत शोर हो रहा था पर अध्यापकों का कोई ध्यान नहीं था अध्यापक विद्यालय में बीड़ी का प्रयोग अधिक करता है। 12 बजे भोजन माता विद्यालय पहुँची। विद्यालय में राशन न होने के कारण भोजन माता घर चली गयी थी। पेपर में भी 29 बच्चे उपस्थित थे दोनों अध्यापकों का बच्चे अनुपस्थित क्यों हैं कोई जवाब नहीं था। 2 बजे विद्यालय की छुट्टी हो गयी।

## रिपोर्ट 6

आज दिनाँक 20/10/2008 को मैं सुबह 9:30 बजे विद्यालय पहुँची। सभी बच्चे विद्यालय पहुँच रखे थे। विद्यालय की चाभी बच्चे के पास थी। विद्यालय के दरवाजे खुले थे।बच्चों की विद्यालय की सफाई भी कर रखी थी। 9:35 बजे शिक्षा मित्र विद्यालय पहुँची। इसके बाद कक्षा में प्रवेश तब उपस्थिति लगायी गयी। 10 बजे पेपर शुरू हुआ। 10:15 अध्यापक हेडमास्टर विद्यालय पहुँचे। आज गणित का पेपर था। पेपर न होने के कारण सभी बच्चों को एक से सौ तक गिनती लिखनें को दी गयी और बाद में कक्षा तीन वालों को पाँच तक पहाड़े कक्षा चार वालों को 15 तक पहाड़े और कक्षा पाँच वालों को 20 तक पहाड़े 3, 4 सवाल जोड़ या घटाने का दिया गया। और दोनों अध्यापक के बरामदे में बैठ गये और सभी बच्चे एक साभ बैठ कर पेपर कर रहे थे। अध्यापकों का बच्चों पर कोई ध्यान नहीं था। कुछ ही देर बाद सभी बच्चे पानी पीनें के लिए बाहर आ जा रहे थे। शिक्षा मित्र तो एक या दो बार कक्षा में बच्चों के पास गयी थी। पर हेडमास्टर कक्षा को देखनें तक नहीं गया। बरामदे में ही बैठ कर बीड़ी पीता रहता है। विद्यालय में मध्याहन भोजन भी नहीं बना 29 बच्चे उपस्थित थे। दोनों अध्यापकों का बच्चे अनुपस्थित क्यों हैं कोई जवाब नहीं था। 12 बजे विद्यालय बंद हो गया।

## रिपोर्ट 7

आज दिनाँक 25/10/2008 को मैं 9:35 मिनट पर विद्यालय पहुँची। सभी बच्चे विद्यालय पहुँच रखे थे। अध्यापिका भी 5 मिनट पहले पहुँच गये थे। विद्यालय के दरवाजे खुल गये थे। जिस पर कक्षा 4 व 5 वाले बैठने का एक ओर बरामदे की सफाई एक लड़की संतोषी ने की। बाकी बच्चे खेलने पर ही लगे हुये थे। विद्यालय पर प्रार्थना भी नहीं बोली गयी। 10 बजे कक्षा में प्रवेश हुये इसके बाद बच्चों की उपस्थिति। कुछ बच्चे बाहर आकर फूलों की क्यारी पर पानी डाल रहे थे। बाकी बच्चे घूमनें पर लगे थे। अध्यापिका अध्यापक न होने के कारण उसकी उपस्थिति लगा रही थी। अध्यापक के साइन न जानने के कारण 10:15 बजे तक अलग पेज पर उतार रही थी। साइन न जानने के कारण शिक्षा मित्र नें (हेडमास्टर) का साइन छोड़ दिया विद्यालय के पाइप पर पानी कम आ रहा था। बच्चे जा तो क्यारी पर पानी डालने पर पानी कम होनें के कारण इधर-उधर घूम रहे थे। छोटे बच्चे भी विद्यालय पर आ रखे थे थोड़ी देर बाद में ये बच्चे घर जाने को कहने लगे तो दो तीन लड़कियाँ इन्हें घर ले गये पर बिना अध्यापिका पूछे अध्यापिका का कोई ध्यान नहीं था। बच्चे विद्यालय पर घूमते रहते हैं। कभी खेतों पर तो कभी इधर-उधर लगे थे। 12 बजे छुट्टी हुई। विद्यालय पर भोजन भी नहीं बना 18 बच्चे उपस्थित थे।

अध्यापक भी विद्यलय पर उपस्थित नहीं थे। शिक्षा मित्र नें कभी अनुपस्थित के बारे में पूछने पर कोई जवाब नहीं दिया।

## रिपोर्ट 8

आज दिनाँक 22/10/2008 मेरा विद्यालय पहुँचने का समय 9:30 बजे विद्यालय में कुछ बच्चों के अलावा अध्यापक व सी.आर.सी. उपस्थित हैं। छात्र-छात्राएं धीरे-2 विद्यालय में प्रवेश कर रहे हैं। आज पेपर कक्षा 4 व 5 का हमारा समाज विषय कक्षा 3 व 2 का संस्कृत विषय व कक्षा 1 व 2 कहा गणित का पेपर है। 10 बजे बच्चों को अपनी-2 कक्षा में बिठा दिया न सफाई हुई और नहीं प्रार्थना हुई कक्षा 5, 4, 3, 2, 1 सभी बच्चों को उत्तर पुस्तिका के साथ प्रश्न पत्र बाँट दिए। 10:20 बजे पर पेपर शुरू करने का निर्देश देकर अध्यापक जी मुझे कक्षा 5, 4 व 3 वालों को पेपर हल करके देने का निर्देश देकर कहा कि विद्यालय परिसर में ट्रेनिंग हो रही है, किसी को पता न चले कि हम बच्चों से नकल करवा रहे हैं इसलिए मैं दरवाजा बाहर से बंद करवा रहा हूँ और आप व मैडम सब बच्चों के पेपर हल करके दे दो। मैं व मैडम

भी बच्चों से पेपर से प्रश्नों के उत्तर लिखवाने लगे कक्षा 5 के विद्यार्थियों के प्रश्न पत्र में एक प्रश्न हैं। पाँच पर्वतों के नाम लिखो। इतने में अध्यापक आते हैं मैं उनसे पूछती हूँ। सर इस प्रश्न का उत्तर क्या है। अध्यापक जी यह कहकर वापस चले गए कि मुझे भी नहीं आता, थोड़े समय में अध्यापक फिर से हाथ में हमारा समाज की पुस्तक लेकर आए और बच्चों से उत्तर किताब ये लिखवाने लगे जो कि पर्वतों के नाम के बजाय पठारों के नाम लिखवा दिए। मैं चुप रही कक्षा 1 व 2 के विद्यार्थियों के पास कोई नहीं है। कक्षा 2 के पास गिनती व पहाड़े लिखनें के लिए दिए हैं व कक्षा 1 के पास केवल गिनती ही लिखनें के लिए दी जिन्हें कि 10:05 बजे से मैडम जी लिखवा रही थी। 10:30 बजे पेपर व परीक्षा समाप्त हो गई आज द्वितीय पाली में कोई पेपर नहीं है। 10:40 बजे विद्यालय बंद हो गया।

## रिपोर्ट 9

आज दिनाँक 01/11/2008 विद्यालय में आज जब मैं पहुँची तो समय 9:45 सुबह हुआ था। इस समय विद्यालय में अध्यापक जी व कुछ विद्यार्थी उपस्थित हैं अध्यापक से नमस्ते व हाल-चाल पूछने के बाद अध्यापक जी ने बच्चों से जो कि कक्षा पांचवी के विद्यार्थी हैं कक्षों व बरामदे की सफाई करवा कर 10:00 बजे बिना प्रार्थना के ही सभी छात्रों को अपने-2 कमरों में बैठने का निर्देश दे दिया। आज कुल 41 बच्चे ही विद्यालय में उपस्थित हुए अध्यापक जी कक्षा 3, 4, व 5 के पास चले गए व मुझे कक्षा 1 व 2 को पढ़ानें की जिम्मेदारी सौंप दी। 10:30 बजे सी.आर.सी. आकर सीधे अपने ऑफिस में जाकर बैठ गए । 10:45 बजे लगभग अध्यापक ने मुझे कक्षा 5 के पास जहां पर कि स्वयं अध्यापक पढ़ा रहे थे। बुलाकर कहा कि कक्षा 5 की दो लड़कियां दीपा व आरती कक्षा 1 व 2 के छात्र-छात्राओं को पढ़ा लेंगी और आप कक्षा 3, 4, व 5 के विद्यार्थियों को पढ़ाओ अध्यापक से मैंने जब परीक्षा परिणाम के बारे में पूछा तो अध्यापक जी ने हंसकर कह दिया कि परीक्षा काफियों का निरीक्षण क्या करना हैं। मैंने सबको उत्तीर्ण कर दिया, अध्यापक जी ने जिन दो छात्राओं को कक्षा 1 व 2 को पढ़ाने के लिए भेजा उन छात्राओं स्वयं ही पढ़ना व लिखना नहीं आता तो वे किसी अन्य को क्या पढ़ाएंगे। भोजन माता के आनें पर 11 बजे भोजन बनना शुरू हुआ, रसोई में जाकर देखनें व पूछनें पर पता चला कि दाल चना व चावल बन रहे हैं, अध्यापक जी अपनें कार्यालय के बजाय सी.आर.सी. के कार्यालय में बैठकर बातें कर

रहे हैं, 10:30 बजे बच्चों को मध्यावकाश के साथ ही भोजन वितरित किया गया। जिनमें कि 41 बच्चों में से केवल 23 बच्चों नें ही भोजन किया बाकी 18 बच्चे थालियाँ न लानें के कारण भोजन नहीं कर पाए बच्चों को मालूम नहीं था कि आज भोजन बनेगा, क्योंकि आज से पहले किसी भी परीक्षा दिवसों में कभी भी भोजन नहीं बना था। मध्यावकाश के बाद 1:50 बजे बंद हुआ।

अध्यापक जी ने मुझे निर्देश दिया कि आप कक्षा 3, 4 व 5 के विद्यार्थियों को कुछ भी विषय पढ़ाओ और स्वयं कार्यालय में चले गए, मैंने भी बच्चों को विज्ञान की किताब निकालने के लिए कहा मगर बच्चों को पढ़ने के बजाय शोर मचाने में मजा आता रहा इसलिए मैं भी चुप ही रही किसी तरह से बच्चों के साथ मेरा समय व्यतीत हुआ और 3:20 बजे पर अध्यापक जी के आदेश पर विद्यालय की छुट्टी कर दी गयी।

## रिपोर्ट 10

आज दिनाँक 31/01/2009 को सुबह 9:38 मिनट पर जब मैं विद्यालय में थे 20 बच्चे थोड़ी देर में अध्यापक जी भी 9:45 बजे पर विद्यालय पहुँचे उस समय बच्चे खेल रहे थे। उसी समय अध्यापिका जी भी पहुँची चाभी लेकर और कमरे खुलवाने लगी आज 46 बच्चे विद्यालय में थे। आज प्रार्थना नहीं हुई बच्चे टाटपट्टियाँ लाए और अध्यापक जी ने सब बच्चों को बिना प्रार्थना के ही अपनी-2 कक्षाओं में बिठा दिया।

आज अध्यापिका जी कक्षा 1 व 2 वालों को पढ़ाने लगी मैंने कक्षा 3 वालों से पहाड़े लिखाए अध्यापक जी अलग बैठे थे। अध्यापक जी कक्षा 5 वाली लड़कियों से कहने लगे कि तुम लोग अपनी 5 सहेलियों के नाम लिख कर मुझे दिखाओ। 10:30 मिनट पर भोजन माता जी पहुँची थोड़ी देर बैठी रही आज भी भोजन लाये हैं। भोजन माता हेमारे साथ आकर बातें करनें लगी।

अध्यापक जी ने भोजन माता से कहा कि आज भी आप अभी घर मत जाना थोड़ी देर तक हमस ब एक साथ बैठे रहे। बच्चे बिना पूछे पानी पीने चले जाते हैं रोड पर मत जाने देना क्योंकि लोग कहते हैं कि यहां के बच्चे हर समय सड़क पर घूमते ही नजर आते हैं। सालों को छुट्टी बिल्कुल न दो ।12:30 बजे हॉफटाइम हुआ बच्चे खेलने लगे हॉफटाइम में एक आदमी विद्यालय में पहुँचे अपने को विधायक बता रहे थे शराब पी रखी थी। अध्यापक जी से कहने लगे कि इस बार मैं विधयक के चुनाव लड़ूँगा तो

अध्यापक जी ने कहा कि आप जीत जाओगे तो कहने लगे कि चाहें मैं हार जाऊँ लेकिन इस बार टिकट जरूर लाऊँगा थोड़ी देर वह बातें करनें लगा।

जब वह चला गया तो हमनें अध्यापक जी से पूछा कि यह आदमी कौन है तो अध्यापक जी नें कहा कि यह बलवीर सिंह नेगी (वर्तमान विधायक) का आदमी है इसलिए लोग इसे विधायक कहकर बुलाते हैं। कोई पंवार बता रहे थे कि यह हमेसा बाजार में दारू पीकर ही नजर आता है जैसे ही इसे विधायक कहकर पुकारो तो खुश हो जाता है।

2 बजे हॉफटाइम बंद हो गया थोड़ी देर मैं बच्चों के साथ बैठी रही अध्यापिका जी भी 2 बजे घर चली गई थी। 3 बजे छुट्टी हो गयी। चाभी अध्यापक जी के पास थी।

## रिपोर्ट 11

आज दिनांक 21/01/2009 को जब मैं स्कूल पहुंची तो अध्यापक जी पहले पहुंच चुके थे मैंने अध्यापक जी से पूछा आज आप जल्दी पहुंच गए तो कहने लगे कि आज डी.एम. ने आना है इसलिए मैं सामान लेकर जल्दी आ गया। अध्यापक जी बच्चों से कमरे और बाहर की सफाई करवा रहे थे इसी बीच अध्यापिका भी 9:49 बजे पर विद्यालय पहुंच गयी। अध्यापक जी ने बच्चों से कहा कि आज कोई भी यहां पर शोर मचाएगा और अध्यापक जी ने बच्चों से लाइन बनवाने लगे बच्चों नें प्रार्थना की राष्ट्रगान प्रतिज्ञा हुई और बच्चे अपनी-2 कक्षाओं में बैठे और अध्यापक जी ने आज बच्चों की उपस्थिति लगाई अध्यापिका को अध्यापक जी ने कक्षा 1 व 2 वालों को पढ़ाने भेजा और दूसरी अध्यापिका को कक्षा 4 व 3 वालों के पास भेजा और मुझे कहा कि तुम कक्षा 5 वालों को हिंदी मैं पढ़ाओ हम बच्चों को पढ़ाने लगे इस बीच विद्यालय में ग्राम प्रधान और काफी लोग भी आ पहुँचे । आज विद्यालय में काफी लोग थे 150 या 160 के करीब लोग इक्ट्ठे हो रखे थे जिनमें कि कुछ विकलाँग लोग और कुछ बूढ़े आदमी औरतें थी जो कि अपनी पेंसन के बारे में यहाँ पर आ रखे थे।

कॉफी लोग फोर्म भर रहे थे आज कुछ लोगों के लिए विद्यालय में ही भोजन बना था 40 व 50 आदमियों के लिए यहाँ पर भोजन बना भोजन माता और एक कोठियाड़ा के दूसरे आदमी थे जो भोजन बना रहे थे। आज विद्यालय में पानी नहीं आ रहा था तो अध्यापक जी नें कक्षा 5 के लड़कों से दूसरे नलों से पानी मंगाया और कक्षा 5 की 4 लड़कियों से कहा कि तुम कोठियाड़ा गांव

से कुछ पंचायती बर्तन लाओ लड़कियां बर्तन लाई थोड़ी देर बाद 12 बजे विद्यालय में तहसीदार और उनके साथ और भी काफी लोग थे विद्यालय में पहुंचे मैंने अध्यापक जी से पूछा कि डी.एम. नहीं आये तो कहने लगे कि ऐसे ही साले बोलते हैं कि हम आयेंगे और हम विद्यालय में खाने की ब्यवस्था भी कर लेते हैं तो बड़े लोग आते नहीं हैं। थोड़ी देर बाद तहसीलदार पंचायत मंत्री और उनके साथ एक डॉक्टर थे जो कि विकलांगों को देख रहे थे सब लोग अंदर बैठे हुए थे और सब लोगों को लाइन से अंदर बुला रहे थे। और जो बिकलांग लोग थे उनके पेंसन की बात कह रहे थे। आज विद्यालय में 69 बच्चे थे। आज बच्चों के लिए भोजन नहीं बना कुछ देर बाद 1:10 बजे पर अध्यापक जी ने कहा कि अब बच्चों को घर भेज देते हैं और बच्चों की छुट्टी कर दी। और हम तीनों से कहा कि आप लोग भी घर चले जाओ यहां पर काफी लोग हैं पता नहीं कि कब तक ये लोग यहां पर रहते हैं और हम तीनों भी घर आ गये।

## रिपोर्ट 12

आज 22/01/2009 को सुबह में 9:35 बजे पर विद्यालय में पहुंची तो विद्यालय में कक्षा 5 के दो लड़के थे एक लड़का घनश्याम के पास विद्यालय की चाभी थी। उसनें कमरे खोले और बरामदे की सफाई दोनों लड़के करनें लगे इस बीच अध्यापक जी भी पहुंच गए काफी बच्चे भी इस बीच विद्यालय में पहुंचे 9:40 पर और अध्यापक जी नें बच्चों को बिठा दिया इसी बीच 9:55 पर दोनों अध्यापिका भी आ पहुंची और अध्यापक जी नें हमें कहा कि एक अध्यापिका बच्चों के पास बैठो और दो लोग बच्चों के प्रोग्राम की तैयारी करवाओ 10:10 मिनट पर भोजन माता भी आ पहुंची थोड़ी देर अध्यापक जी के साथ बैठी रही और 11 बजे से भोजन बनानें लगे। आज विद्यालय में 68 बच्चे आये थे।

अध्यापक जी बाहर बैठे हुए थे तब तक जूनियर स्कूल के अध्यापक जी के पास कोई डाक आई थी और अध्यापक जी नें हम तीनों लोगों से कहा कि आप लोग विद्यालय में रहो मैं मीटिंग में जा रहा हूँ मुझे घनसाली बुला रखा है और अध्यापक जी 10:30 बजे निकल गए। हम लोग बच्चों को प्रोग्राम (26 जनवरी) की तैयारी करवाने लगे। इस बीच सीआरसी विद्यालय में पहुंचे हमनें कहा कि अध्यापक जी कुछ देर पहले ही निकले हैं। सीआरसी चले गए 12:40 बजे हॉफटाइम हुआ और बच्चे भोजन करने लगे। आज 45 बच्चों नें भोजन किया 23 बच्चों नें आज भोजन नहीं किया 2 बजे हॉफटाइम बंद हुआ और

थोड़ी देर हम बच्चों के साथ तैयारी करवाने लगे और अध्यापक जी कह के गए थे कि 2 या 2:30 बजे छुट्टी कर देना और हमनें 2:30 पर छुट्टी करवा दी।

## रिपोर्ट 13

आज दिनांक 23/10/2008 को मैं 9:30 बजे सुबह विद्यलय पहुंची सभी बच्चे विद्यालय पहुंच गये थे। अध्यापिका भी 9:30 बजे आयी। अध्यापिका के आनें के बाद विद्यालय का दरवाजे अध्यापिका नें ही खोला। इसी दौरान विद्यालय की सफाई की जिस पर कक्षा 4 व 5 वालों नें एक कक्ष और बरामदे की सफाई की। 10 बजे संस्कृत के पेपर शुरू हुआ। 10:20 अध्यापक जी विद्यालय पहुंचे और बताया कि आज विद्यालय में अधिकारी का दौरा है। शिक्षा मित्र नें 1 व 2 वाले बच्चों को घर भेज दिया था। अधिकारी आने के कारण विद्यालय से तीन लड़के उन बच्चों को लेने घर गये और बच्चे विद्यालय पहुंच गए। इसके बाद कार्यालय और फूलों की क्यारी विद्यालय के प्रांगण की सफाई की और बच्चों से हेडमास्टर नें उत्तर किताब से लिखने को कहा और शिक्षा मित्र ने रजिस्टर पर जिलद लगायी और विद्यालय का पूरा अनुशासन अच्छे ढंग से कर दिया गया।

12:30 बजे हॉफटाइम हुआ हॉफटाइम में लड़के घर गये और सभी लड़कियां विद्यालय पर ही थे। लड़कियां कमरे पर ही खेल रही थी। 35 मिनट बाद लड़कों को भी घर से बुलाया गया। 1:15 हॉफटाइम के बाद दोनों अध्यापकों नें बच्चों की कुछ भी पढ़ाई नहीं की। कुछ बच्चे गानें लगा रहे थे तो कुछ खेल रहे थे पर अध्यापकों का उस समय कोई ध्यान नहीं था। आज विद्यालय पर कोई भी अधिकारी नहीं आये। शिक्षा मित्र बोली भोजनमाता को भी विद्यालय बुलाओ राशन न होने के कारण भोजनमाता को नहीं बुलाया । विद्यालय पर भोजनमाता भी नहीं बना आज विद्यालय पर 24 बच्चे उपस्थित थे। 3 बजे छुट्टी हो गयी।

## रिपोर्ट 14

आज दिनाँक 27/09/2008 को मैं 9:30 सुबह विद्यालय पहुंची और अध्यापिका थोड़ी देर पहले पहुंच चुकी थी और तीन बच्चे सत्तवेंद्र, शैलेंद्र, विकाश कार्यालय की सफाई कर रहे थे। इसके बाद प्रतिमा, संतोषी, रेखा ने चार पांच वाले कक्ष और बरामदे की सफाई की 9:52 पर कक्षा में बैठ गये। और विद्यालय में प्रार्थना नहीं बोली गयी। बच्चों की उपस्थिति लगाई गयी। इसके

बाद तीन चार लड़कों से विद्यालय के बॉक्स की सफाई करवाई गयी। जब बच्चे बॉक्स से कागज फेंकने को बाहर लाते हैं तो उन्हीं कागज से जहाज बना रहे थे और जहाजों को उड़ाने लगे। कुछ समय बाद कक्षा में बैठ जाते हैं आज सब बच्चों को गोला बनाने को दिया। और दो को अ से ज्ञ तक पढ़ना और पहचानने को दिया तीन वालों को हिंदी के अलग-2 शब्द पहचाननें को दिया और चार वालों को किताब पढ़ने को कहा इनको किताब पढ़नी नहीं आती और कक्षा में बिना पेंसिल के थे। पांच वालों को हिंदी की किताब से पाठ पढ़ाया गया। थोड़ी देर बाद बच्चे अंदर बाहर आने जाने लगे। इनमें से दो बच्चे दूसरे विद्यालय के थे। जिनका नाम इस विद्यालय में भी लिखवा रखा है। और उसी विद्यालय की ड्रेस में आ रखे थे। कुछ देर में अमीषा, सत्तवेंद्र, शैलेंद्र घर चले गये और विद्यालय में अध्यापिका के साथ उसकी तीन साल की श्रेया बेटी स्कूल आती है तो कभी कक्षा में रोती है तो उसकी बहन पूनम या और बच्चे भी इसे खिलाने या संभालने पर लगे रहते हैं और बच्चों का खाने के लिए घर से लाया रहता है। और सुबह से ही कक्षा में खाने पर लग जाते हैं। बच्चो को पता ही नहीं कि पढ़ाई हो रही है या नहीं। अध्यापक भी कक्षा में बैठ रखे हैं। फिर भी बच्चे खाने या हल्ला करनें पर लगे रहते हैं।

अध्यापिका के कथानुसार:- अध्यापक नें कभी-कभी विद्यालय आना है। इसको घर की चिंता होने के कारण से विद्यालय का पूरा रजिष्टर गंदा करके नीचे फर्स में ही फेंक रखा था और सब बच्चे नीचे गाँव में जा रखे थे। विद्यालय में यदि (हेडमास्टर) ठीक नहीं है तो विद्यालय कैसा ठीक रहेगा।

12:24 पर हॉफटाइम हुआ हॉफटाइम में सभी बच्चे खेतों में खेलनें जा रखे थे। कोई पेड़ पर जा रखे थे तो कोई झाड़ी में कूद रहे थे दो तीन छोटे बच्चे अध्यापिका की लड़की के साथ विद्यालय में ही थे। हॉफटाइम के बाद सब बच्चों को बरामदे में बिठाया गया। इसके बाद बच्चों से बालदिवस करवाया गया। सभी बच्चों से कविता बुलायी गयी। विद्यालय में घंटी नहीं है घंटी न होनं के कारण कुछ बच्चे 1:30 बजे विद्यालय पहुँचे। आज विद्यालय में भोजन भी नहीं बना। हेडमास्टर विद्यालय में उपस्थित नहीं थे। 18 बच्चे उपस्थित थे 1:30 बजे विद्यालय की छुट्टी हो गई।

## रिपोर्ट 15

आज दिनांक 6/11/2008 को मैं 9:30 बजे पहुँची तो उस समय थोड़े बच्चे आये थे। बाकी नहीं आये थे 9:45 बजे शिक्षा मित्र वाली मैडम भी आ गयी

थी। फिर मैडम बच्चों की लाइन लगाई प्रार्थना में कक्षा 5 की प्रियंका और कक्षा 4 की रजनी आगे आई। प्रार्थना में थोड़ी बहुत सुधार पहले से थी। 10:15 बजे बच्चे बैठ गये थे। उसके बाद मैडम ने बच्चों की दो दिन की उपस्थिति लगाई। उसके बाद मैडम ने कक्षा 3, 4, 5 वालों के पास 20 तक पहाड़े लिखए और मैंने कक्षा 1 व 2 वालों को। कुछ शब्द लिखायी तो एक भी बच्चा इनको नहीं लिख पाये। कक्षा 1 के जितने बच्चे भी हो सब गंदे आते हैं।

इस बीच गुरुजी अपना ही रजिस्टर का काम करता रहा मैडम मुझे पूछने लगी कि शिवी क्या ये लोग आये थे तो इन्होंने कुछ बोला नहीं कि मैडम क्यों नहीं आयी। मैंने कहा कि उन्होंने मुझसे आपके बारे में पूछा भी नहीं है। मैडम कहनें लगी कि रोज आती थी कल ही नहीं आयी और वे भी उसी दिन आये मुझे क्या पता था कि उन लोगों ने आना है। फिर मैडम ने कक्षा 4 वालों को गणित के सवाल दिये तो सिर्फ राजन नें सवाल बताए बाकी को पहाड़े नहीं आते तो सवाल कहां से करेंगे। उसके बाद 12 बजे हॉफटाइम हो गया। इसी बीच बच्चों ने भोजन भी खाया भोजन में दाल चावल बना था। 1 बजे बच्चों को बिठा दिया उसके बाद मैंने कक्षा 4 व 5 वालों को हिंदी पढ़ायी और मैडम नें कक्षा 1, 2, 3 वालों को पढ़ाया। आज गुरूजी नें बिल्कुल नहीं पढ़ाया। 3 बजे छुट्टी हो गयी।

## रिपोर्ट 16

आज दिनाँक 09/01/2009 सुबह 9:40 बजे पर जब मैं विद्यालय पहुँची तो अध्यापक जी भी 9:45 पर विद्यालय में आ गये थे। अध्यापक जी ने बच्चों से कमरे खुलवाए और बच्चों को कहा कि लाइन बनाओ और बच्चे लाइन बनानें लगे। जिसमें कि कुछ बच्चे 10:10 बजे तक विद्यालय पहुंचे और अध्यापिका भी जो कि अध्यापक जी ने विद्यालय में स्टाफ कम होने के कारण गांव से 400 रुपये महीने पर रखी है। वह भी पहुंची, प्रार्थना हुई राष्ट्रगान प्रतिज्ञा 10:20 बजे पर अध्यापक जी ने बच्चों से टाटपट्टियां मंगवाई और सब बच्चों को बाहर ग्राउंड में बिठाया। कक्षा 4 व 3 वालों को अलग बिठाया। अध्यापिका जी कक्षा 3 व 4 वालों को गणित में गिनती लिखवाने लगी और मैं कक्षा 5 वालों को हिंदी में पढ़ाने लगी।

और 10:40 बजे पर भोजन माता भी पहुंची अध्यापक जी ने मुझे कहा कि आप थोड़ा मेरे साथ रजिस्टर का काम करो। मैंने थोड़ी देर बच्चों को हिंदी

में काम करवाया और अध्यापक आजकल के पास पहुंची अध्यापक जी नें कहा कि आजकल बच्चों के टेस्ट हुए हैं आप उनके नम्बर चढ़ा दो बच्चों को मैं संभालता हूँ। अध्यापक जी ने एक रजिष्टर रखा था जिसमें बच्चों के टोटल नंबर निकाल रखे थे।

अध्यापिका और मैंने बच्चों की कापी देखी जिसमें कि बाहर से कोटिकरण लिखा था अंदर काफी में एक भी बच्चे ने साफ नहीं लिखा और न ही कोई उत्तर सही था। मैंने अध्यापक जी से कहा कि बच्चों ने उत्तर गलत लिखे हैं तो कहने लगे कि आप ऐसे ही नंबर दे दो क्योंकि मैंने ये काम सी आर सी को दिखाना है।

11 बजे भोजन बनना शुरू हुआ भोजन में अरहर की दाल चावल बने। आज टोटल बच्चे 67 थे। 1 बजे हॉफटाइम हुआ और बच्चे भोजन करने लगे अध्यापक जी हॉफटाइम में बच्चे जूनियर वाले विद्यालय में गये और हमें कहा कि आप दोनों ये काम निपटाओ हम दोनों काम कर रहे थे। आज 48 बच्चों ने भोजन किया भोजन कम ही बना था सबको एक बार ही भोजन मिला दूसरी बार के लिए भोजन खत्म हो गया।

2 बजे हॉफटाइम बंद हो गया 2:20 बजे अध्यापक जी अपने विद्यालय में आ गये और कहने लगे कि आप दोनों बच्चों को देखो मैं भागवत कथा सुनने जा रहा हूँ। अध्यापक जी 2:30 बजे भागवत कथा सुनने चले गये और हमसे कह गए कि 3 बजे विद्यालय की छुट्टी कर देना। थोड़ी देर में हमने बच्चों को पढ़ाया और 3 बजे हमने छुट्टी कर दी। जिसमें कि छुटटी के समय बच्चे थे 52, बाकी बच्चे पहले ही घर बिना पूछे ही चले गये।

**नोट:-** उक्त रिपोर्ट को हम कुछ भी बदलाव किये बिना हू ब हू दे रहे हैं। यहां तक कि विराम चिन्ह तक भी। यहां स्कूल का नाम और शोध छात्र/छात्राओं के नाम न देना हमारी मजबूरी है। शोध छात्र स्नातक की कक्षाओ में पढ़ रहे हैं। हमारा उद्देश्य अध्यापक को बदनाम करने का नहीं है बल्कि सरकार का वह चेहरा सामने लाने का है जो शिक्षा के नाम पर वह दिखाने जा रही है। छात्र/छात्राओं के नाम देने से स्कूलों की पहचान आसान हो जाती है। अनावश्यक किसी व्यक्ति को बदनाम करने का हमारा कोई उद्देश्य नहीं है।

## जाते-जाते

उत्तराखण्ड के शिक्षक संगठनों की स्थिति भी अतिरिक्त रूप से भिन्न दिखती है। वे अपने निजी हितों से ऊपर उठकर शिक्षा और समाज के बारे में ज्यादा चिंतित हैं, ऐसा नहीं लगता। आम लोगों में उनके प्रति क्या अवधारणा है, उसको लेकर वे निश्चिन्त ही नजर आते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि स्कूलों से अध्यापकों का लगातार अनुपस्थित रहना, विश्व बैंक द्वारा प्रायोजित कथित सरकारी कार्यक्रमों सहित जो भी कारण हो उससे आम समाज अनभिज्ञ ही है और अध्यापक संगठन स्कूल से बाहर रहने के कारणों को जनता के बीच में ठीक से नहीं रख पाये हैं। जिसके कारण कहीं न कहीं अध्यापक समाज की छवि को ठेस पहुंच रही है। विश्व बैंक और सरकार की मंशा कहें या षडयंत्र कहें, यही हो रहा है। जिसमें वे सफल होते हुए भी दिख रहे हैं। शिक्षक संगठनों को भी समझना चाहिए कि समाज में जितनी पारदर्शिता अनुपस्थित रहेगी उतना ही समाज का मत उनके खिलाफ जायेगा। और उतनी ही मजबूती के साथ सरकार स्कूलों को प्राइवेट हाथों में सौंपने के लिए तर्क गढ़ेगी और फुर्ती दिखायेगी। इससे पहाड़ और देश के खास कर ग्रामीण समाज का बहुत बड़ा अहित होने जा रहा है। जिसका वर्तमान चेहरा शिक्षा के मौलिक अधिकार के बिल से उभर कर सामने आया है। जिसने शिक्षा के नाम पर देशी-विदेशी पूंजीपतियों को धंधा करने की खुली छूट दे दी है।

**चेतना आंदोलन**, एक स्वायत्त लोक संगठन है जो संसाधनों के सामाजिक नियंत्रण, रोजगार, शिक्षा, पानी आदि के मुद्दों पर टिहरी एवं समस्त उत्तराखंड प्रदेश के स्थानीय निवासियों को एकजुट कर रहा है।

**त्रेपन सिंह चौहान**, जन्म 1971, केपार्स बासर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड; शिक्षा एम.ए. इतिहास; प्रकाशित रचनाएँ: उपन्यास—*सृजन नवयुग का, यमुना;* कहानी संग्रह—*दरवाजे के पीछे;* हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़ एवं अन्य भारतीय भाषाओं में कहानियाँ, कविताएँ एवं समसामायिक विषयों पर लेख निरंतर प्रकाशित। चेतना आंदोलन के साथ सक्रिय भागीदारी।